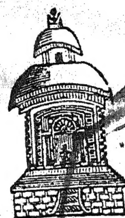
॥ श्रीः ॥

कलियुगी
सन्तसमालोचना ।

रीवां निवासी—
कविवर रामनन्द लिखित ।


काशी
लहरी प्रेस द्वारा मुद्रित और प्रकाशित ।

१९०७ ई०

प्रथम बार १०००] [मूल्य)॥

॥ श्रीः ॥

कलियुगी
सन्तसमालोचना ।



एक रदन गुन सदन गज बदन ध्याइ उरकंज ।
'रामनंद' बरनन कियो पचीसी मनरंज ॥

॥ कवित्त ॥

बाबाजी कहाय काबा करत मही को फिरैं नागाजो प्रसिद्ध जटा जूट सिर धारे हैं । भसम अखंड अंडकोसन चढ़ाय ऊंचे पारा मारि जानै ऐसे बचन उचारे हैं ॥ बिहरैं स्वतंत्र परतन्त्रता न जाने परदार बित्त आपनोई जानत बिचारे हैं । जूता लात खात सरमात न तनिक जेल-खानो काटि आवैं तऊ हिम्मत न हारे हैं ॥१॥

चीपिया वघम्बर लँगोट आड़बन्द आसा और कछु सामा नाहिं त्यागी पना धारे हैं । ब्राह्मन बिलोकि दूधाहारी फलाहारी बनै डूंगरी भखत रामलड्डू नाम पारे हैं ॥ भाखै रामनन्द लहसुन को पताल लौंग ढौंग दरसाय माल मा-

रत लुटारे हैं ॥ जूता लात खात सरमात न तनिक
जेलखानो काटि आवैं तऊ हिम्मत न हारे हैं ॥२॥

बांधे कंठ हीरा पर पीरा की न जानै बात
हाथसों हजारा जपैं झोरी गरे डारे हैं। तपसी
कहावैं खावैं लपसी लपेटि घी में बच्चा हम पत्ती
भखैं तप ब्रत धारे हैं ॥ कोऊ हैं ठढ़ेसरी अधो-
मुख ह्वै झूलैं कोऊ काम क्रोध लोभ ते तथापि
नहिं न्यारे हैं। जूता लात खात सरमात न त-
निक जेलखानो काटि आवैं तऊ हिम्मत न
हारे हैं ॥ ३ ॥

कोऊ नेती धोती करि पानी पी पखाल धोवैं
कोऊ जल सज्जा बान सज्जा को सवांरे हैं।
भाखै रामनन्द कोऊ धूनी तपैं धूप ही में झोपड़ी
बनावैं सूनी सरिता किनारे हैं ॥ अलज असोला
बिभिचारिन को दासी करि अन्त प्रगटात तब
होत मुख कारे हैं। जूता लात खात सरमात न
तनिक जेलखानो काटि आवैं तऊ हिम्मत न
हारे हैं ॥ ४ ॥

नामी नर ढूंढ़ि कै बतावत गुरू को नाम
धामो कहवावत महंतन के बाल के। नारी देखि

काहू की पकरि लेत नारा भारी बैद बनि जात घात करत कुचाल के ॥ रामनन्द दैहैं बूटी स-रिता किनारे चलो भलो करि दै हैं बैन बोलत कमाल के। कामी बड़े इन्द्र से कविन्द से क-लामी बदनामी को डरत हैं न स्वामी आज काल के॥ ५ ॥

गेरूआ बसन पेन्हि करमैं कमण्डल लै ऐसे बैन बोलैं जैसे जानै लिप भाल के। कहैं हम दंडी पै पखंडी दुनियां भर के चेटक देखावैं केते करि इन्द्रजाल के ॥ भाखै रामनन्द गुन कहां लैा बखान करौं उनके न दोष हैं प्रभाव कलि काल के। कामी बड़े इन्द्र से कविंद्र से कलामी बदनामी का डरत हैं न स्वामी आज काल के॥६॥

केते भूमि घूमत सवारी घोड़ा गाड़ी केते रथ गजारूढ़ हैं चढ़ैया सुखपाल के। केते करैं भाषन सुखासन मैं सोवैं केते केते मुख जोवैं बार वधुता न ताल के॥ भाखै रामनन्द केते छोकरन संग राखैं डोकरन माखै ऐसे हाल चाल ढाल के । कामी बड़े इन्द्र से कविन्द्र से कलामी वदमानी को डरत हैं न स्वामी आज

काल के ॥ ७ ॥

केते धारी सत्ता कहैं हम कलकत्ता पढ़े इंगलिश फारसी औ बंगला निसाल के। कोऊ करैं कीमियां बदनसीमियां के हेत कोऊ जानै चेटक चतुरताई चाल के ॥ भाखै रामनन्द छल छंद करि भाखैं हम सोंनो करि देत दूनो जादू सो कमाल के। कामी बड़े इन्द्र से कविन्द्र से कलामी बदनामी को डरत हैं न स्वामी आज काल के ॥ ८ ॥

कहैं हम शाक्त मंत्र साक्षी प्रसिद्ध बड़े कड़े दिल कै कै पूजा करत कुमारगी। बलि बकरा को दै मगावैं मत्स मोटे मोटे खोटे करि मुद्रा दरसावैं एकबारगी ॥ रामनन्द कोई कान कुब्ज कोई मैथिल हैं बतावैं कोई कहैं हम बड़े गोत्र गारगी। कुलटा महान पाय शक्ति अनुमानै मद्य पिएं औ पियावैं ब्रह्मचारी बाम मारगी ॥९॥

बरनी बने परनारी मैं रहत ध्यान गारी दै दै ब्राह्मनो को कहत कुमारगी। साबर प्रसिद्धि हमैं भसम करैंगे तोहि ऐसे बैन भाखि धमकावैं एक बारगी ॥ भाखै रामनन्द डोरा धागा करि

जानत हैं काली की उपासना है कुल चोखो गारगी । कुलटा महान पाय शक्ति अनुमानै मद्य पिऐं औ पियावैं ब्रह्मचारी बाम मारगी ॥

तरनी भवाब्धि गायत्री को न उचार जानै बेद मंत्र पूछे घोंघा अस मुख बातें हैं। फेरि कहैं मैं तो विद्या हेत ब्रह्मचारी भयो गुरुजी हमारे हमैं गीता जी पढ़ाते हैं॥ रामनन्द नगरी निवासी दुजनारिन सों गप्प शप्प मारि रोज भिक्षा मांग लाते हैं। परनी न जानै बिना परनी पवित्र मानै करनी कठिन करैं बरनी कहाते हैं ॥११॥

सहि सहि पाप भार धरनी रसातल को गवन करै ना पुन्य वानन के नाते हैं। नातो कलि कोप्यो है विरक्तन पै बीसो बीस रीस मति कीजो जौन दीस्यो तौन गाते हैं॥ भाखै रामनन्द छल छंदन छके हैं काम फंदन ढके हैं पै न नेकु सरमाते हैं। परनी न जानै बिना परनी पवित्र मानै करनी कठिन करैं बरनी कहाते हैं॥

चेला भौन भरे कोठरी मैं जाय चेली करैं केसर मलय अङ्ग अङ्ग उमगत है । तोशक बि-

छाय तामैं तकिया लगाय पुन्य पायबे के आस
चेली प्रेम मैं पगत है॥ रामनन्द पौरि पर संख
धुनि भेरी करो भीतर न ऐओ कोऊ मानस
उगत है। कंत महा पापिन के कामही के तन्त
पागे अन्त न महंत के बुराई को लगत है॥१३॥

आयो मठ हाथ मद छायो महा माथ पर
ठाटे ऐसे ठाट ठगहारे को ठगत है। स्वारथ मैं
साने पर मारथ न जानै कबौं तबौं परमारथी
कहावत भगत है॥ भावै रामनन्द परशाद
बांटैं माइन को माई माई कहिकै लुगाई कै
लगत है। कंत महा पापिन के कामही के तन्त
पागे अंत न महंत के बुराई को लगत है॥१४॥

साधुन न पालत अदालत को बाढ्यौ खर्च
यज्ञ मैं न जरे तप्त मुद्रासों दगत है। गाय नहिं
पालैं घोड़ा हाथी लै जमात चालैं तापर निसा-
नन की जोतिसी जगत है॥ भावै रामनन्द
भावै काली रोटी धौरी दार दूसरी रसोई के न
प्रेम मैं पगत है। कंत महा पापिन के कामही के
तंत पागे अंत न महंत के बुराई को लगत है॥१५॥

एक एक साधू रांड़ तीन तीन राखे रहैं

जटा जूट माथे भारी भेख मैं भगत है। रोगी पाय जोगी जो बतावत जड़ी औ बूटी बचा परमारथ सो रोग होत गत है॥ मुद्रा पांच लाओ गांजा सूखा मंगवावैं गिर नारी को पिलावैं यश जाहिर जगत है। कंत महा पापिन को काम ही के तंत पागे अंत न महंत के बुराई को लगत है॥१६॥

पोते खाक अङ्गन अखंड सुँड मुँड फिरैं खैबे को कढ़ाप्रसाद गुरु के उपासिये। चोरी करि जानै पर नारी हरि आनै जुआ खेल मैं सयाने कहूं डारैं गरे फाँसिये॥ सिर मैं जड़ाव जामैं सेरन भभूत भारी गांजा भांग खांय तऊ मति मद प्यासिये। नङ्गा ह्वै ह्वै दङ्गा करि करत अड़ंगा ऐसे लंपट उदासी ह्वै हैं नरक निवासिये॥१७॥

दास पद पाय कै अचार औ बिचार भूकैं मिलत अतीतन मैं भक्षाभक्ष भासिये। वाह गुरु अलख तुही है निराकार सार भाखैं स्वयं ब्रह्म अविकार अबिनासिये॥ तापै गुरु साहब की कथनी कथत सदा मथनी मथत गोप्य मदन

बिलासिये । नङ्गा ह्वै ह्वै दङ्गा करत अड़ंगा ऐसे लंपट उदासी ह्वै हैं नरक निवासिये ॥१८॥

मोची घांची बढ़ई लोहार औ कुम्हार काछी सबन को काम जानै सबते निराले हैं। नाई को करम जानै करिबो हजामत को धोबी सङ्ग धोबी वस्त्र राखत उजाले हैं॥ भाखै रामनन्द रामानन्दी मारगी मैं मिलें कहां लौ गनाऊं जेते सहत कसाले हैं। कामी क्रोधी कूर कपटी हू को मिलाय लेत समरथ ऐसे स्वामी नारायन वाले हैं ॥१९॥

मोटे मोटे मन्दिर विभूति भांति भांतिन की सेवक बनाय केतनो के घर घाले हैं। कोई को करज दै कै कोई को फरज दैकै कोई की अरज लैकै छोटे मोटे पाले हैं॥ दाई माई कचा बचा संयुत समाज राजै मोह ममता के तोड़ि सकत न जाले हैं। कामी क्रोधी कूर कपटी हू को मिलाय लेत समरथ ऐसे स्वामी नारायन वाले हैं ॥२०॥

चोटी काटि फेंको बिन सिखा कै यवन जैसे बंधन करम छोड़ि तोड़ि उपवीत हैं। बदले

दया के केते बलि मिसि हिंसा करैं भरैं अघ ओघ जमपुर ते न भीत हैं॥ भाखै रामनन्द हिंगलाज को पियाला पिया हूमरा गरे मैं अब काहूके न मीत हैं। काम के न एकौ बदनाम धाम धामन मैं हलके हराम दस नाम के अतीत हैं ॥२१॥

कोई का अखाड़ा जूना कोई निरबानी बने कोई अबधूतिनो से राखैं रूचि प्रीत हैं। कोई तङ्ग तोड़नागा कोई सिरफोड़नागा कोई धन जोड़नागा लादे बिपरीत हैं॥ भाखै रामनन्द इन्हें करहुं प्रणाम सदा गुरु औ गोबिन्द मैं न राखत प्रतीत हैं। काम के न एकौ बदनाम धाम धामन मैं हलके हराम दस नाम के अतीत हैं॥२२॥

बीज तिथि मानै आये गयेहू को सनमानै भजन सुनावें ब्रह्मज्ञान मनो घोखे हैं। मोटे एकतारे औ मजीरे लै समाज जोरि ताल पर ताल मारैं लैको मनो जोखे हैं॥ भाखै रामनन्द छैल बिसनी सुनैया आवैं तिनको खिलावते घी शक्कर औ चोखे हैं। धन हेत ढेढ़हू को दारा सुता सौंप देत ऐसे साधू मारगी कुमारगी अनोखे हैं॥२३॥

मंडप करत फेरि जोति दरसावैं पुनि पाट

पै बिठाय आंख बांधि देत धोखे हैं। मैथुन करावैं तामैं बूड़े तिरे को बिचार श्रद्धा शांत करि बीज अमृत समोखे हैं॥ भाखै रामनन्द ऐसे करत अघोर कर्म मारग को पंथ सेवा धरम मैं चोखे हैं। धन हेत देहहू को दारा सुता सौंपि देत ऐसे साधू मारगी कुमारगी अनोखे हैं॥२४॥

गुनगरु आई कैसी बिद्या को विनोद कहां कोरी सिद्धिता के भरे भाषन सुनाते हैं। बाना है दयाल का रहा न डर काल का न लेख रहा भाल का जी रामरङ्ग राते हैं॥ भाखै रामनन्द बन तुलसी उजारि लावैं हुलसी न मति कबैं राम गुन गाते हैं। बार के रखाये कै तौ तिलक लगाये कै तौ भगवा रँगाये आज साधू कहे जाते हैं॥२५॥

॥ समाप्त ॥

